पाठ-4

राखी की चुनौती

बहन आज फूली समाती न मन में,
तड़ित आज फूली समाती न घन में।
घटा है न फूली समाती गगन में,
लता आज फूली समाती न वन में।।

कहीं राखियाँ हैं, चमक है कहीं पर,
कहीं बूँद है, पुष्प प्यारे खिले हैं।
ये आई है राखी, सुहाई है पूनी,
बधाई उन्हें जिनको भाई मिले हैं।।

मैं हूँ बहिन किन्तु भाई नहीं है,
है राखी सजी पर कलाई नहीं है।
है भादों, घटा किन्तु छाई नहीं है,
नहीं है खुशी पर रुलाई नहीं है।।

मेरा बन्धु माँ की पुकार को सुनकर -
के तैयार हो जेलखाने गया है।
छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को,
वह ज़ालिम के घर में से लाने गया है।।

Anwar Husain GMS Kharora Fatehgarh sahib

मुझे गर्व है किन्तु राखी है सूनी,
वह होता, खुशी तो क्या होती न दूनी।
हम मंगल मनावें, वह तपता है धूनी,
है घायल हृदय, दर्द उठता है खूनी।।

अब तो बढ़े हाथ, राखी पड़ी है,
रेशम-सी कोमल नहीं, यह कड़ी है।
अजी देखो लोहे की यह हथकड़ी है,
इसी प्रण को लेकर बहिन यह खड़ी है।।

आते हो भाई ? पुनः पूछती हूँ,
विषमता के बंधन की है लाज तुमको ?
तो बन्दी बनो देखो बन्धन है कैसा,
चुनौती यह राखी की है आज तुमको।।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਚਮਕ	=	चमक	ਖੁਸ਼ੀ	=	खुशी
ਬੂੰਦ	=	बूँद	ਘਰ	=	घर
ਹੱਥਕੜੀ	=	हथकड़ी	ਬੰਦੀ	=	बंदी

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-

ਬਿਜਲੀ	=	तड़ित	ਭੇਦਭਾਵ	=	विषमता
ਭੈਣ	=	बहिन	ਫੁੱਲ	=	पुष्प
ਬੱਦਲ	=	घन	ਆਸਮਾਨ	=	गगन
ਬਦਲੀ	=	घटा	ਪੁੰਨਿਆ, ਪੂਰਨਮਾਸ਼ੀ	=	पूनी

3. शब्दार्थ

घटा	=	जल भरे बादलों का समूह
कलाई	=	हाथ में हथेली के जोड़ के ऊपर गट्टा
भादों	=	भादों का महीना, भाद्रपद, सावन के बाद पड़ने वाला देशी महीना
ज़ालिम	=	जुल्म करने वाला
धूनी	=	ठंड से बचने के लिए जलायी जाने वाली आग
विषमता	=	असमता, भीषणता, जटिलता।
चुनौती	=	युद्ध, शास्त्रार्थ आदि के लिए आह्वान, ललकार

Anwar Husain CMS Kharora Fatehgarh sahib

4. उपयुक्त शब्द भरकर काव्य-पंक्तियाँ पूरी करें :-

(क) .... है न फूली समाती गगन में,
....वन में।।

(ख) ये आई है राखी सुहाई है.......................
...............उन्हें जिनको...............मिले हैं।।

(ग) मेरा बन्धु..................की पुकारों को सुनकर-
के तैयार हो...............गया है।

(घ) ....हुई माँ की..................को,
वह....................के घर में से लाने गया है।।

5. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) लता कहाँ पर फूली नहीं समाती ?
(ख) राखी का त्योहार किस दिन होता है ?
(ग) इस कविता में आई बहन का भाई कहाँ है ?
(घ) बहन किसको बधाई देती है ?
(ङ) 'मुझे गर्व है किन्तु राखी है सूनी' का भाव बतायें।
(च) यह कविता भारत की स्वतंत्रता से पहले लिखी गई है या बाद में ?

क) लता वन में फूली नहीं समाती।
ख) राखी का त्योहार श्रावण मास की पूर्णिमा को होता है।
ग) इस कविता में आई बहन का भाई क्रान्तिकारी है और जेल में है।
घ) बहन उन बहनों को बधाई देती है जिनके भाई उनके पास हैं।
ङ)इस पंक्ति का भाव है कि बहन को गर्व है कि उसका भाई देश की रक्षा के लिए जेल गया हुआ है पर बहन होने के नाते उसकी राखी सूनी पड़ी है।
च) यह कविता भारत की स्वतन्त्रता से पहले लिखी गई है।

6. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) 'राखी की चुनौती' कविता की सार लिखें।
(ख) इस कविता में बहन ने पराधीन देश के भाइयों को क्या सन्देश दिया है ?

क) राखी की चुनौती कविता एक बहन की करुण पुकार है, जो राखी के पर्व पर अपने भाई का इन्तजार कर रही है। इस त्योहार के दिन सारा वातावरण प्रसन्नता से भरा भरा है। मगर कवियत्री का भाई देश सेवाहित जेल गया हुआ है। बहन को उस पर गर्व है मगर उसके मन में उदासी भी है। वह अपने भाई को चुनौती देती है कि कैसे भी कर के देश के प्रति अपने कर्त्तव्य के साथ साथ बहन के प्रति अपने कर्त्तव्य को भी निभाए।
ख) इस कविता में बहन पराधीन देश के सभी भाइयों को सन्देश देती है कि उन्हे अपने कर्त्तव्य की ओर सजग होने की आवश्यक्ता है। देश की आँखें और उम्मीदें उनहीं पर लगी हैं।

8. दो दो समानार्थक शब्द लिखो:-

तड़ित:-बिजली, चपला।
गगन:-आकाश, आसमान, अम्बर।
खुशी:-हर्ष, प्रसन्नता, उल्लास।
घन:-बादल, जलद, मेघ।
पुष्प:- फूल, कुसुम, सुमन।
भाई:-बन्धु, भ्राता, अनुज।

9. शुद्ध करके लिखो:

राखीयां- राखियाँ
विशमता-विषमता
हिरदय- हृदय
प्रन-प्रण

10. इन मुहावरों के अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग करो:-

फूले न समाना:- बहुत खुश होना____
धुनी तपना:- कष्ट झेलना____
खुशी दोगुनी होना:- बहुत खुश होना____

11. विपरीतार्थक शब्द लिखो:-

धरती- आकाश
पराधीनता-स्वाधीनता
कठोर- कोमल
अमावस-पूर्णिमा
अमंगल-मंगल
मुक्ति-बन्धन

Anwar Husain GMS Kharora Fatehgarh sahib

पाठ - 4 राखी की चुनौती (कविता)

कवयित्री :- सुभद्रा कुमारी चौहान

बहन आज फूली न समाती मन में।
तड़ित आज फूली न समाती घन में।।
घटा आज फूली न समाती गगन में ।
लता आज फूली न समाती वन में ।।
कहीं राखियाँ हैं, चमक है कहीं पर;
कहीं बूदें हैं, पुष्प प्यारे खिले हैं।
ये आई है राखी, सुहाई है पूनी,
बधाई तुम्हें जिनको भाई मिले हैं।
मैं हूँ बहिन किन्तु भाई नहीं है।
है राखी सजी पर कलाई नहीं है॥
है भादों, घटा किन्तु छाई नहीं है,
नहीं है ख़ुशी, पर रुलाई नहीं है॥
मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर-
के तैयार हो जेलखाने गया ।

छिनी हुई माँ की स्वाधीनता को,
वह ज़ालिम के घर में से लाने गया है॥
मुझे गर्व है किन्तु राखी है सूनी,
वह होता, ख़ुशी तो क्या होती न दूनी ?
हम मंगल मनावें, वह तपता है धूनी।
है घायल हृदय, दर्द उठता है खूनी॥
अब, तो बढ़े हाथ राखी पड़ी है।
रेशम-सी कोमल नहीं यह कड़ी है॥
अजी देखो लोहे की यह हथकड़ी है,
इसी प्रण को लेकर बहिन यह खड़ी है॥
आते हो भाई ? पुनः पूछती हूँ,
विषमता के बंधन की है लाज तुमको ?
तो बन्दी बनो देखो, बन्धन है कैसा,
चुनौती यह राखी की है आज तुमको॥
****

काव्य-पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या/सरलार्थ
1बहन आज फूली न समाती मन में। तड़ित आज फूली न समाती घन में।। घटा आज फूली न समाती गगन में । लता आज फूली न समाती वन में ।।
प्रसंग :- ये कविता की पंक्तियाँ हमारी आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में से कविता 'राखी की चुनौती' से ली गई हैं। इस कविता की कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। इसमें उन्होंने राखी के मौके पर देश की स्वतंत्रता के लिए जेल जाने के लिए प्रेरित किया है।
व्याख्या :- इनमें कवयित्री कहती है कि राखी के पर्व पर खुशी से फूला नहीं समा रही, उधर

बिजली भी बादलों के बीच से चमक-चमक कर अपनी खुशी जता रही है। आसमान भी बादलों की घटाओं से घिर गया है और जंगल में फैली हुई बेलें भी अपनी प्रसन्नता को प्रकट कर रही है। इस समय राखी के मौके पर सब और खुशी का माहौल है।

2.कहीं राखियाँ हैं, चमक है कहीं पर;
कहीं बूँदें हैं, पुष्प प्यारे खिले हैं।
ये आई है राखी, सुहाई है पूनी,
बधाई तुम्हें जिनको भाई मिले हैं।

प्रसंग :- ये कविता की पंक्तियाँ हमारी आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में से कविता 'राखी की चुनौती' से ली गईं हैं। इस कविता की कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। वह बहनों को

राखी के पर्व की बधाई दे रही है।
व्याख्या :- इनमें कवयित्री राखी के पर्व पर बहन की दशा बताते हुए कहती है कि उसे पड़ी हुई राखियाँ झिलमिल करते हुए लग रही हैं, तो कहीं पर पानी की बूँदें चमक कर, तो कहीं पर सुंदर फूल खिले हुए लग रहे हैं। उसे राखी के पर्व पर पूर्णिमा भी अति सुंदर और मनोरम लग रही है। कवयित्री उन सब बहनों को बधाई देती है, जिनको भाई मिलें हैं।
3. मैं हूँ बहिन किन्तु भाई नहीं है। है राखी सजी पर कलाई नहीं है॥ है भादों, घटा किन्तु छाई नहीं है, नहीं है ख़ुशी, पर रुलाई नहीं है॥
प्रसंग :- ये कविता की पंक्तियाँ हमारी आठवीं

कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में से कविता 'राखी की चुनौती' से ली गईं हैं। इस कविता की कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। बहन कहती है कि राखी के त्योहार पर उसका भाई तो गर्व करने वाले उद्देश्य के कारण जेल गया है।

व्याख्या :- कवयित्री राखी के पर्व पर बहन की दशा के बारे बताते हुए कहती है कि वह तो अपने भाई के लिए राखी सजाए हुए है, पर जिस भाई की कलाई पर वह राखी बाँधने वाली है, वह भाई इस मौके पर उसके पास नहीं है। राखी के पवित्र त्योहार पर तो उसे सावन का महीना ऐसे लगता है जैसे आकाश बादलों से विहीन हो गया हो। राखी के त्योहार को अर्थपूर्ण बनाने वाला भाई उसके पास नहीं, पर वह इस बात का शोक नहीं मनाना चाहती

क्योंकि उसका भाई तो गर्व करने वाले उद्देश्य के कारण जेल गया है, भारत की आज़ादी के लिए जेल गया है।

4. मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर-
के तैयार हो जेलखाने गया है।
छिनी हुई माँ की स्वाधीनता को,
वह ज़ालिम के घर से लाने गया है॥

प्रसंग :- ये कविता की पंक्तियाँ हमारी आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में से कविता 'राखी की चुनौती' से ली गईं हैं। इस कविता की कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। इसमें बहन कहना चाहती है कि उसका भाई भारत माँ आज़ादी के लिए जेल गया है।

व्याख्या :- कवयित्री राखी के पर्व पर बहन की दशा को प्रकट करते हुए कहती है कि मेरा भाई तो गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता की दुख भरी पुकार सुनकर उसकी आज़ादी के लिए जेल गया है। वह अंग्रेजों द्वारा भारत माता की बल से छीनी आज़ादी को उस अत्याचारी के घर से वापस लाने के लिए गया है।

5. मुझे गर्व है किन्तु राखी है सूनी,
वह होता, ख़ुशी तो क्या होती न दूनी ?
हम मंगल मनावें, वह तपता है धूनी।
है घायल हृदय, दर्द उठता है खूनी॥

प्रसंग :- ये कविता की पंक्तियाँ हमारी आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में से कविता 'राखी की

चुनौती' से ली गईं हैं। इस कविता की कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। राखी के पर्व पर भाई के न आ पाने पर भी बहन को उस पर गर्व है।
व्याख्या :- राखी के पर्व पर बहन की दशा को प्रकट करते हुए कवयित्री कहती है कि वह अपने भाई पर गर्व करती है जो भारत की आज़ादी के लिए जेल गया है। अगर उसका भाई उसके पास होता तो उसकी खुशी और अधिक बढ़ जाती। उसका भाई जेल के दुखों को झेल रहा है,तो उसकी कमी पर वह राखी के त्योहार की खुशी कैसे मनाएँ। यही बात सोचते हुए उसका हृदय पीड़ा से घायल हो रहा है और दुख का अनुभव हो रहा है।
6.अब, तो बढ़े हाथ राखी पड़ी है।

रेशम-सी कोमल नहीं यह कड़ी है॥
अजी देखो लोहे की यह हथकड़ी है,
इसी प्रण को लेकर बहिन यह खड़ी है॥

प्रसंग :- ये कविता की पंक्तियाँ हमारी आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में से कविता 'राखी की चुनौती' से ली गईं हैं। इस कविता की कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। बहन कहती है कि भाई उसकी राखी कोमल डोर नहीं है, यह आज़ादी के लिए प्रेरित करने वाली हथकड़ी के समान है।

व्याख्या :- राखी के पर्व पर बहन कहती है कि भले ही उसका भाई देश की स्वतंत्रता के लिए जेल गया है, पर वह उसकी प्रतीक्षा कर रही है कि उसका भाई कब अपनी कलाई राखी

बँधवाने के लिए आगे करे। उसकी बहन.की राखी केवल एक रेशम की डोर की तरह कोमल नहीं , यह तो लोहे की हथकड़ी के समान है जो उसके भाई को भारत की आज़ादी के लिए निमंत्रण देती है। उसकी राखी अपने भाई से देश की स्वतंत्रता का वचन चाहती है।

7. आते हो भाई ? पुनः पूछती हूँ,
विषमता के बंधन की है लाज तुमको ?
तो बन्दी बनो देखो, बन्धन है कैसा,
चुनौती यह राखी की है आज तुमको॥

प्रसंग :- ये कविता की पंक्तियाँ हमारी आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में से कविता 'राखी की चुनौती' से ली गईं हैं। इस कविता की कवयित्री

'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। वह अपने भाई को देश को गुलामी के बंधन से छुटकारा पाने के लिए अपनी राखी से माध्यम से चुनौती दे रही है।

व्याख्या :- राखी के पर्व पर एक देशभक्ति की भावना से भरी बहन अपने भाई को खोजते हुए कहती है कि हे भाई ! मैं आपसे दोबारा पूछती हूँ कि क्या तुम आ रहे हो ? क्या तुम्हें देश के गुलाम होने के कारण लज्जा आ रही है ? अगर ऐसा है तो तुम देश के लिए बंदी बनो, परतंत्रता का बंधन कैसा है ? इसका दुख और पीड़ा का अनुभव करते हुए आज मेरी राखी की यही चुनौती है कि तुम देश को स्वतंत्र करवाने में अपना योगदान दो।

****

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें।		
1	ਚਮਕ	चमक
2	ਬੂੰਦ	बूँद
3	ਹੱਥਕੜੀ	हथकड़ी
4	ਖੁਸ਼ੀ	खुशी
5	ਘਰ	घर
6	ਬੰਦੀ	बंदी

*****

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें।		
1	ਬਿਜਲੀ	तड़ित
2	ਭੈਣ	बहिन
3	ਬੱਦਲ	घन
4	ਬਦਲੀ	घटा
5	ਭੇਦਭਾਵ	विषमता
6	ਫੁੱਲ	पुष्प
7	ਆਸਮਾਨ	गगन
8	ਪੁੰਨਿਆ, ਪੂਰਨਮਾਸ਼ੀ	पूनी

****

3. शब्दार्थ		
1	घटा	जल भरे बादलों का.समूह
2	कलाई	हाथ में हथेली के जोड़ के ऊपर गट्टा
3	भादों	भादों का महीना, भाद्रपद , सावन के बाद पड़ने वाला देशी महीना
4	ज़ालिम	ज़ुल्म करने वाला
5	धूनी	ठंड से बचने के लिए जलायी जाने वाली आग
6	विषमता	असमता, भीषणता,जटिलता
7	चुनौती	युद्ध, शास्त्रार्थ आदि के लिए आह्ववान, ललकार

4. काव्य- पंक्तियाँ पूरी करें :-

क) घटा आज फूली न समाती गगन में ।

लता आज फूली न समाती वन में ।।

ख) ये आई है राखी, सुहाई है पूनी,

बधाई तुम्हें जिनको भाई मिले हैं।

ग) मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर-

के तैयार हो जेलखाने गया ।

घ) छिनी हुई माँ की जो स्वाधीनता को,

वह जालिम के घर में से लाने गया है॥

****

5. एक - दो वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर लिखो।

प्रश्न 1 :- लता कहाँ पर फूली नहीं समाती ?

उत्तर :- लता वन में फूली नहीं समाती।

प्रश्न 2 :- राखी का त्योहार किस दिन होता है ?

उत्तर :- राखी का त्योहार श्रावण (सावन) मास की पूर्णिमा के दिन होता है ।

प्रश्न 3 :- इस कविता में आई बहन का भाई कहाँ है ?

उत्तर :- इस कविता में आई बहन का भाई देश की आज़ादी के लिए जेल गया है।

प्रश्न 4 :- बहन किसको बधाई देती है ?

उत्तर:- वह उन बहनों को बधाई देती हैं, जिनके भाई राखी के त्योहार पर उनके पास हैं।

प्रश्न 5 :- 'मुझे गर्व है किन्तु राखी है सूनी' का भाव बतायें ?

उत्तर :- इस पंक्ति का भाव यह है कि बहन कहती है कि मुझे गर्व है कि मेरा भाई देश की स्वतंत्रता के लिए जेल में गया है, परंतु उसे इस बात का भी दुःख है कि राखी के पर्व पर उसका भाई उसके पास नहीं है।

प्रश्न 6 :- यह कविता भारत की स्वतंत्रता से पहले लिखी गई है या बाद में ?

उत्तर :- 'राखी की चुनौती' कविता भारत की स्वतंत्रता से पहले लिखी गई है। जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था।

****

6. इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखें।

प्रश्न :- 'राखी की चुनौती' कविता का सार लिखें।

उत्तर :- 'राखी की चुनौती' की कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। इसमें उन्होंने राखी के मौके पर देश की स्वतंत्रता के लिए जेल जाने के लिए प्रेरित किया है। राखी के पर्व पर बहन खुशी से फूला नहीं समा रही, बिजली भी बादलों के बीच चमक कर अपनी खुशी जता रही है। बादलों की घटाओं से आसमान घिर गया है और जंगल में फैली हुई बेलें भी अपनी खुशी को प्रकट कर रही है। बहन को राखियाँ झिलमिल करते हुए लग रही हैं, तो कहीं पर

पानी की बूँदें चमक कर, तो कहीं पर सुंदर फूल खिले हुए लग रहे हैं। उसे राखी के पर्व पर पूर्णिमा भी अति सुंदर और मनोरम लग रही है। कवयित्री उन सब बहनों को बधाई देती है, जिनको भाई मिलें हैं। बहन तो अपने भाई के लिए राखी सजाए हुए है, पर जिस भाई की कलाई पर वह राखी बाँधने वाली है, वह भाई इस मौके पर उसके पास नहीं है। राखी के त्योहार को अर्थपूर्ण बनाने वाला भाई उसके पास नहीं, पर वह इस बात का दुःख नहीं मनाना चाहती, क्योंकि उसका भाई तो देश की आज़ादी के कारण जेल गया है। वह अंग्रेजों द्वारा भारत माता की बल से छीनी आज़ादी को उस अत्याचारी के घर से वापस लाने के लिए गया है। वह अपने भाई को बंदी बनकर

गुलामी के कष्टों को सहन करने को कह रही है और अपनी राखी से उसे चुनौती देकर भारत माता को आज़ाद करवाने के लिए कह रही है।

प्रश्न :- इस कविता में बहन ने पराधीन देश के भाइयों को क्या संदेश दिया है ?

उत्तर :- इस कविता के द्वारा बहन गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता की आज़ादी के लिए आन्दोलन में भाग लेने के लिए सभी भाइयों को प्रेरित कर रही है। अंग्रेजों द्वारा बलपूर्वक भारत माँ की छीनी आज़ादी को वापिस पाने के लिए संघर्ष करने के लिए कहा गया है। भारत देश को पूरी तरह से गुलामी की ज़जीरों से आज़ाद करवाने के लिए प्रेरणा दी है।

7.काव्य-पंक्तियों का सरलार्थ करें।

3. मैं हूँ बहिन किन्तु भाई नहीं है।
है राखी सजी पर कलाई नहीं है॥
है भादों, घटा किन्तु छाई नहीं है,
नहीं है ख़ुशी, पर रुलाई नहीं है॥

सरलार्थ :- कवयित्री राखी के पर्व पर बहन की दशा के बारे बताते हुए कहती है कि वह तो अपने भाई के लिए राखी सजाए हुए है, पर जिस भाई की कलाई पर वह राखी बाँधने वाली है, वह भाई इस मौके पर उसके पास नहीं है। राखी के पवित्र त्योहार पर तो उसे सावन का महीना ऐसे लगता है जैसे आकाश बादलों से विहीन हो गया हो। राखी के त्योहार

को अर्थपूर्ण बनाने वाला भाई उसके पास नहीं, पर वह इस बात का शोक नहीं मनाना चाहती क्योंकि उसका भाई तो गर्व करने वाले उद्देश्य के कारण जेल गया है, भारत की आज़ादी के लिए जेल गया है।

****

2. मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर-
के तैयार हो जेलखाने गया है।
छिनी हुई माँ की स्वाधीनता को,
वह ज़ालिम के घर से लाने गया है॥

सरलार्थ :- कवयित्री राखी के पर्व पर बहन की दशा को प्रकट करते हुए कहती है कि मेरा भाई तो गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता की दुख भरी पुकार सुनकर उसकी

आज़ादी के लिए जेल गया है। वह अंग्रेजों द्वारा भारत माता की बल से छीनी आज़ादी को उस अत्याचारी के घर से वापस लाने के लिए गया है।

****

8. समानार्थक शब्द लिखें ।		
1	तड़ित	चपला , बिजली , विद्युत
2	गगन	नभ ,आसमान ,आकाश
3	खुशी	हर्ष , प्रसन्नता
4	घन	बादल , जलद , मेघ
5	पुष्प	फूल , प्रसून , सुमन,कुसुम
6	भाई	सहोदर , बन्धु ,भ्राता

****

9. शुद्ध करके लिखो।	
1	राखीयां - राखियाँ
2	हिरदय - हृदय
3	विशमता - विषमता
4	प्रन - प्रण

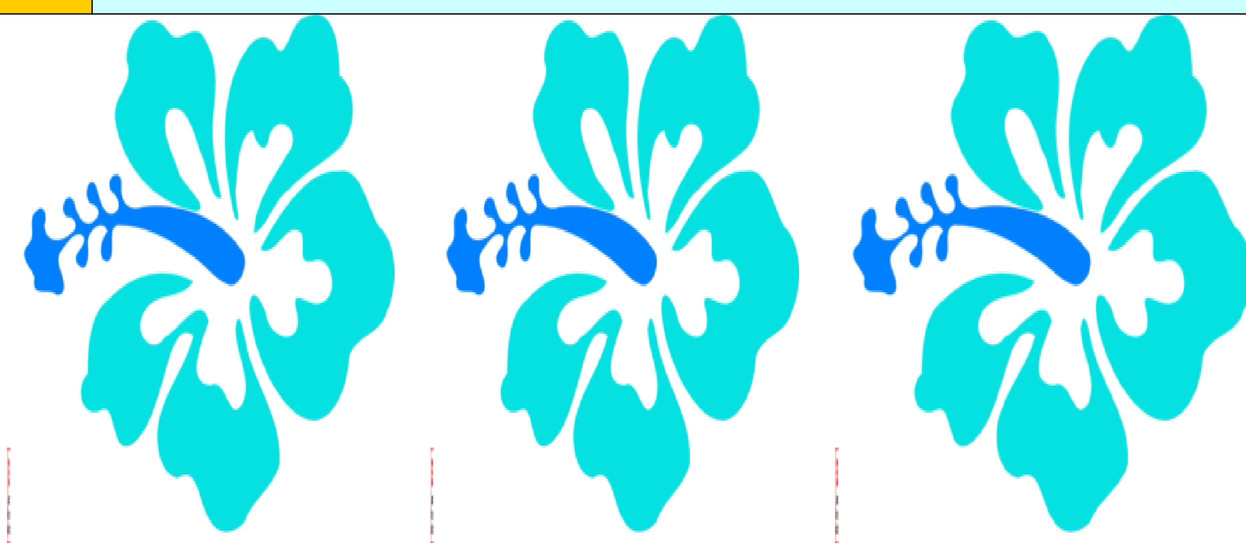

****

10. विपरीतार्थक शब्द लिखो	
1	धरती - आकाश
2	पराधीन - स्वाधीन
3	कठोर - कोमल
4	अमावस - पूर्णिमा
5	अमंगल - मंगल
6	मुक्ति - बंधन

****

सौजन्य :- सुनीता चोपड़ा, हिंदी शिक्षिका

स.क.सी.सै.स्मार्ट स्कूल खुर्दपुर, जालंधर।

मार्गदर्शक व सहयोगी :- हरीश नागपाल

ज़िला रिसोर्स पर्सन हिंदी

हिंदी शिक्षक

सरकारी हाई स्कूल निज्जरां, जालंधर।